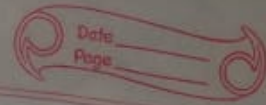


ROHTAS MAHILA COLLEGE SASARAM

27-04-2020



[1]

Department History - Subsidiary

B.A. I

Dr. SATYAJET SARANG (2019-20)

[1] प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन
स्रोत : \Rightarrow

★ प्राचीन इतिहास जानने के निम्नलिखित
तीन महत्वपूर्ण स्रोत हैं : \Rightarrow

1. पुरातात्विक स्रोत
2. साहित्यिक स्रोत
3. विदेशी यात्रियों के विवरण

पुरातात्विक स्रोत :-

प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए
पुरातात्विक, साहित्यिक, सर्वाधिक प्रामाणिक
आदि आते हैं।

आमिलेख : \Rightarrow पुरातात्विक स्रोतों के

अन्तर्गत सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत
आमिलेख हैं। प्राचीन भारत के
अधिकतर आमिलेख पाषाण, शिलाओं
स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा
प्रतिमाओं पर उल्कीर्ण हैं।

★ सर्वाधिक प्राचीन आमिलेख मध्य एशिया
के बौगजकोई नामक स्थान से लगभग

1400 ई०पू० में मिले हैं।

इस आमिलेख में इन्द्र, मित्र, वरुण और
नासत्य आदि वैदिक देवताओं के नाम
मिलते हैं।

भारत में सबसे प्राचीन आभूषण
आशोक के हैं जो 300 ई०पू० के
लागभग हैं। मौर्यक युद्ध
निहत्त रूप में उद्भवित से प्राप्त
आभूषणों में आशोक के स्लैबों के
रूप में उल्लेख है। इस आभूषणों
के आदर्श पर धर्म और राजत्व
के अर्थों के अर्थों में उल्लेख है।

★ आशोक लिपि में है। पश्चिमी भारत
काई केवल उद्देश्य पश्चिमी लिपि
के अर्थ में उद्भवित नवरीली लिपि
में है। स्वरीली लिपि पश्चिमी

लिपि की भांति है से बर्हि की
और लिखी जाती हैं।

★ सर्वप्रथम 1827 में जेम्स प्रिंसेप
बाही लिपि में लिखित आशोक
के आभूषणों की महा था।

★ सिक्के →

सिक्के के अध्यायन की मुद्राशास्त्र
कहते हैं। पुराने सिक्के में
दांड़ी सोना और सीसा धातु के
कण्टी थे।

★ आराम्म, सिक्के पर चिन्ह मान
मिलते हैं। किन्तु बाद के सिक्कों
पर राजाओं और देवताओं के नाम
तथा लिपि में भी उल्लिखित मिलते
हैं।

Dr. Satyajit Sarkar
27.4.2020

History

मूर्तियाँ : प्राचीन काल में

मूर्तियों का निर्माण कुषाण काल से आरम्भ होता है कुषाण युद्ध तथा गुप्तोत्तर काल में जन निर्मित मूर्तियों के विकास में जन सामान्य की दार्शनिक सहा है। भावनाओं का विशेष प्रतिपत्ति

कुषाण कालीन गान्धार कला पर विदेशी प्रभाव पड़ने का पञ्चक मयूरा कला पूर्णतः स्वदेशी है।

समारक एवं भवन : →

प्राचीन काल में महलों और मंदिरों की शैली से वास्तुशिल्प के विकास पर पर्याप्त प्रभवा पड़ता है।

उत्तर भारत के मंदिरों का शैली कश्मिर के काबिल मंदिरों तथा दक्षिणा पश्चिम में मंदिरों के उत्तर शैली में है। दक्षिणी पूर्वी स्थिति का बहुम सुदृष्टि का पाद मंदिरों का सुदृष्टि से भारतीय संस्कृति के प्रसार पर प्रकाश पड़ता है।

चित्रकला : चित्रकला से हमें इस समय के प्रमुख के विषय में जानकारी मिलती है। अजन्तों के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति मिलती है।